335
H 51 P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1384/1012
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 335

B
1811

891.431
K 527C

RECEIVED
10 DEC 1930
DEPARTMENT

❀ बन्दे मातरम् ❀

चमकता स्वराज्य ।

❀ प्रथम पुष्प ❀

अधीन होकर बुरा है जीना, मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर
सुधाको तजकर जहरका प्याला, पीना अच्छा स्वतन्त्रहोकर

—— —— :o: ——

जब अधर्म अन्याय खुब बढ़ते, नदी पाप की बहती है,
अत्याचार अधिक जब बढ़ते, नहीं भूमी सह सक्ती है।
पुन्य श्लोक महात्मा तबही, जन्म भूमि पर लेते है,
मीटा पापको पुनः पुन्य का, बीज यहां पर बोते है ॥

प्रकाशक तथा संग्रहकर्ता
रनछोड़ दास खत्री
मोहल्ला सिद्धेश्वरी, बनारस सिटी।

प्रथमबार] १६३० [मूल्य एक आना

CALCU... POLIC... BURRA...

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT. OF INDIA No. 335 Date 16.7.77

वन्देमातरम्

चमकता स्वराज्य।

—:o:—

१—झन्डा ऊँचा रहे हमारा।

विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम—सुधा सरसानेवाला।
वीरों को हरषानेवाला, मातृ-भूमि का तन-मन सारा॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय-संकट सारा॥
इस झण्डे के नीचे निर्भय, ले स्वराज यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा॥
आओ प्यारे, वीरो!!आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥

२—इन गांधी टोपी वालों ने

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥

सदियों की गुलामी में फँस कर, अपने को भी जो भूल चुके ।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सर्वस्व देश हित कर दो तुम, अर्पण—सुपूत हो माता के ।
सर्वस्व त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
अनहित में भारत माता के जो, लगे देश द्रोही बन कर ।
उनको सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
पट बन्द हुए कितनी मिल के, लंका शायर भी चीख उठा ।
चर्खे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सर धुन विललाते हैं ।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं ।
नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
"अब मेल करो आपस में तुम; जंजीर गुलामी की तोड़ो ।"
माना गांधी का कहना यह, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
है विकट समस्या 'तीस' की भी, इसको भी हल करना होगा ।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं ।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब ।
विश्वास दिलाया देसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने ॥

"भारत" इलाहाबाद ।

३–स्वतंत्र भारत

अहाहा! मोहन के मुख से निकला स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत।
सचेत होकर सुना सभी ने स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
हर एक घर में मची हुई है स्वतंत्रा की विचित्र हलचल।
हर एक बच्चा पुकारता है स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
बना के कुटियां स्वतंत्रता की, सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक में बजेगा डंका स्वतंत्रता का।
कहेंगे तैंतिस करोड़ मिलकर स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥

४–जालिम नहिं रखनी

नहि रखनी नहिं रखनी सरकार। जालिम नहिं रखनी ॥
आये थे व्यापार करन को। बन गए दावेदार ॥ जालिम
भूखों मरें किसान देश के। मजा करे सरकार ॥ जालिम
मुसलमानोंका मक्का छीना। सिक्खोंका दरबार ॥ जालिम
लाला लाजपत कतल कराया, जवाहरको डंडों पिटवाया।
भगतदत्त को कैद कराया। दिया दासको मार ॥ जालिम
पुलिस और फौज यूं बोली। अब हम चलायें किस पर गोली।
ये सब हैं अपने हमजोली। तू हैगी हुशियार ॥ जालिम

पेशावर से शहर में जाकर । परजा को निहत्थी पाकर ।
मशीनगन की बाढ़ लगाकर । दिया सैकड़ों मार ॥ जालिम
अब स्त्रियों का नंबर आया । कई जगह डंडों पिटवाया ।
कमलावती को जेलमें पाया । सरोजनी पर किया भूलका वार ।
नहिं रखनी नहिं रखनी सरकार । जालिम नहिं रखनी ॥

(रूपचन्द पञ्जाबी)

५—गजल ।

मिट गया यह देश भारत, खाली निशानी रह गयी ।
मान सब जाता रहा जिल्लत उठानी रह गयी ॥
जिस देश मे पैदा हुये दानी करण हरिश्चन्द्र से ।
आज उन पुरुषों की अब यहां पर कहानी रह गयी ॥
जिस मुल्क में मिलता रहा बिन मोल के घी दूध दधि ।
आज उसही देश में पानी की हानी रह गयी ॥
शूद्र तक भी बोलते थे यहां पै भाषा संस्कृत ।
अब पण्डितों के पास भी खाली निशानी रह गयी ॥
देखलो बारह वर्ष के नौजवानों की दशा ॥
अबतो चश्मो पर भला चश्मो की कमानी रह गयी ।
नाचती हो गर तवायफ जांय वहा पर दौड़ कर ॥
रामचन्द्र हरि की कथा में नींद आनी रह गयी ॥

६—प्रतिज्ञा ।

ऐ ! हिन्द तेरे नाम का डङ्का बजाऊंगा ।
दुनियां में तेरी इज़्ज़तो शोहरत बढ़ाऊंगा ॥ १ ॥
जिन ज़ालिमों ने तुझको है मुझसे जुदा किया ।
तेरी क़सम मैं ख़ाक में उनको मिलाऊंगा ॥ २ ॥
जो ले गये हैं लूट के सब तेरा मालो ज़र ।
उनको मज़ा मैं उनके किये का चखाऊंगा ॥ ३ ॥
चोरों से छीन दौलतो हशमत सभी तेरी ।
दुलहिन सा एक बार मैं तुझको सजाऊंगा ॥ ४ ॥
दुश्मन के दस्ते ज़ुल्म से करके तुझे रिहा ।
फिर हिन्दियों की मैं तुझे माता बनाऊंगा ॥ ५ ॥
हस्ती तुझे बख़्शी थी पुरुषाओं ने मेरे ।
मैं जान देकर भी तुझे अपना बनाऊंगा ॥ ६ ॥
दस्ते उदू में छोड़ूंगा तुझको न ज़ीनहार ।
जैसे बनेगा उससे मैं तुझको छुड़ाऊंगा ॥ ७ ॥
भारत ! हां क़सम है तेरी ख़ाक पाक की ।
जबतक जीऊंगा तुझको न दिल से भुलाऊंगा ॥८॥
तेरी नजात का मुझे हर दम रहेगा ख़्याल ।
पाये बग़ैर तुझको न मैं चैन पाऊंगा ॥ ९ ॥

तुझ बिन हराम होगा मुझे ऐशे ज़िन्दगी।
तेरी क़सम न सेजों पर आराम पाऊंगा ॥ १० ॥
सोऊंगा बांस फूस पर तेरे फ़िराक़ में।
पत्तों में ज़हर मार करूंगा जो खाऊंगा ॥ ११ ॥
दुनियां के राजपाट भी मुझको अगर मिले।
तेरे बिना न कुछ इसे ख़ातिर में लाऊंगा ॥ १२ ॥

७—मेरी आरज़ू।

ज़िन्दगी की गर मुझे दुनियां में यह तावीर हो।
हाथ में हो हथकड़ी और पांव में ज़ंजीर हो ॥ १ ॥
मौत की रक्खी हुई आगे मेरी तस्वीर हो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो ॥ २ ॥
हां भयानक से भयानक भी मेरा आख़ीर हो।
पेट में खंजर दुधारा औ जिगर में तीर हो ॥ ३ ॥
अलग़रज़ जो कुछ भी मुमकिन हो मेरी तहक़ीर हो।
मुल्क मेरा आज़ाद हो लेकिन मेरी तक़सीर हो ॥ ४ ॥
मैं कहूंगा फिर भी आज़ादी का शैदा हूं मैं।
फिर करूंगा काम दुनियां में अगर पैदा हूं मैं ॥ ५ ॥

८—क्या हमारे दिल में है

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

देखना अब ज़ोर कितना बाज़ुये कातिल में है ॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरये मंज़िल में है ॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां !
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ॥
आज फिर मक़तल में कातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है ॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार ।
अब तेरी हिम्मत की चरचा गैर की महफ़िल में है ॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
सिर्फ मिट जाने की हसरत अबदिले 'बिस्मिल' में है ॥

६—रफ्तार

तबदील गवर्नमेण्ट की रफ्तार न होगी ।
गर कौम असहयोग पै तैयार न होगी ॥
बन जांयगे हर शहर में जलियांन वाले बाग ।
इस मुल्क से गर दूर यह सकार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम जेर करेंगे ।
इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी ॥
यह जेलखाने टूट कर अब और बनेंगे ।

इनमें तमाम कौम गिरफ्तार न होगी ॥
वह कौन असीरे वतन होगी भला जिसपर
हंस हस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥
सौदाई हैं हम को दो लोहे की बेड़ियां ।
सोने के जेवरों में यह झन्कार न होगी ॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम ।
खेती वतन की दोस्तो तैयार न होगी ॥
हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे मुज़तरिब ।
ग़म में जो हमारे ग़मख्वार न होगी ॥

१०–एक शैदाये वतन का तराना ।

शैर ।

अल्लाह गर मुझे कभी जेवर का शौक़ हो ।
हाथों में हथकड़ी हो गले में भी तौक़ हो ॥
लग़ज़िश न खाऊं जिस्म पै आफ़त हज़ार हो ।
ख़िदमत में क़ौम का मेरा ये सर निसार हो ॥
इज्ज़त की ख्वाहिश दिलमें न जिनहार हो मुझे ।
ढ़ जाऊं वतन के लिये गरदार हो मुझे ॥
धुन में वतन की हर घड़ी करता सफर रहूं ।
आने के लिये जेल में सीना सिपर रहूं ॥

हाकिम की बयां लिखने से जब क़लम बन्द हो।
इज़हार हो मेरा यही आज़ाद हिन्द हो॥
ताक़त दे खुदा हिन्द को आज़ाद करा दूं।
या दुश्मनों के जेल को आबाद करा दूं॥
फ़रहाद कैस का मुझे दर्जा नसीब हो,
मेरा वतन ही बस खुदा मेरा हबीब हो॥
दुश्मन की गोलियों का हो सीने पे निशाना।
गाता हो "इन्द्र" तब भी वतन का ही तराना॥

११-मेरा मक़सद।

मेरा मक़सद रण के नारों से सुफल होने को है।
खंजरों की धार से मंजिल ये तय होने को है॥
याद खुदीराम की अशफ़ाक जितेनदास की।
लाश मक्कारों में भी अब जिन्दगी लाने को है॥
सुर्ख छींटों से लिखा था मैंने मक़तल में कभी।
खूने बिस्मिल आस्मा पर रंग ले आने को है॥
क्रान्तिकारी नौजवानों की धधकती लूह में।
ज़ालिमों के ज़ुल्म का अब खातमा होने को है॥
ऐ शहीदे मुल्क तेरी हड्डियों की नींव पर।
आशिकों का पाक मन्दिर जल्द उठ जाने को है॥

१२—हिन्दियों की आहें

हौसला फिर बढ़ता जाता है दिले नाशाद का।

हां मदद पे जज्बए दिल वक्त है इमदाद का ॥
मानचेस्टर और लन्दन में भी हलचल मच गई।
आपने देखा असर मजलूम पै बेदाद का ॥
हाय! यह कहना किसी का आर्जूए वस्ल पर।
हौसला तो देखिये इस खानुमा बरबाद का ॥
मैं यहां फाके से हूं और फस्ले गुल आने को है।
आह सोज़ा फूक दे अब खानुमा सैयाद का ॥
जां निसारी से ही हासिल होगा मकसद पे 'मुईद'।
वक्त अब बाकी नही है नाल ओ फरियाद का ॥

१३-दमन का दिवाला

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा।
खिजां से खूब उजड़ेगा अरे जालिम चमन तेरा ॥
सताले और थोड़े दिन सेबेदिल बे गुनाहों को।
यहां से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ॥
हमें लाचार कर तूने झुकाया खूब चरणों में।
हमीं बिपरीत अब इसके बिलोकेंगे नमन तेरा ॥
अरे कायर निहत्थों को रेंगाया पेट के बल क्यों।
लखेंगे शीघ्रही हम भी अरे पापी पतन तेरा ॥
बहुत अब कर चुका शासन यहां से अब उठा आसन।

हमारा देश है भारत नहीं है यह वतन तेरा ॥
दबाले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को ।
निहत्थे निर्बलों की आह से होगा निधन तेरा ॥
दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन क़ायम ।
करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा ॥
मिलेगी आत्मबल को जय दमन तेरे पशु बल पर ।
चकित संसार देखेगा मिटेगा जब पतन तेरा ॥

१४—गुलाम खाना

भारत न रह सकेगा हर्गिज़ गुलामखाना,
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना ।
खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का,
कर देंगे जालिमों का हम बंद ज़ुल्म ढाना ॥
कौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी,
हिन्दू, मसीह, मुसलिम गाते हैं यह तराना ।
अब भेड़ और बकरी बनकर न हम रहेंगे,
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारी,
एक खेल हो रहा है फांसी पर झूल जाना ।
भारत वतन हमारा भारत के हैं हम बच्चे,
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

१५—अब देशी पहिनों जी

अब देशी पहिनों जी, बहिनो फैशन को छोड़ के।
है विनती करती जी, भारत माता कर जोड़ के॥

❁ शैर ❁

जो तुम पहनो खद्दर बहिनो एक पन्थ दो काज।
एक तो पैसा घर में बचे दूजे हो भारत आजाद॥
अब खद्दर पहिनो जी, न बैठो मुखड़ा मोड़ के॥ अब०—

❁ दोहा ❁

जो तुम समझो खद्दर चुभता न बनते छैल छबीले।
भारतवर्ष के अन्दर कपड़े बनते रंग रंगीले॥
पर पहिनो देशी जी, लन्दन से नाता तोड़ के॥ अब०—

❁ शैर ❁

भारतवर्ष के बच्चे भूखों मरते रुदन मचाते।
इङ्गलैण्ड के कुत्ते पहिनो दूध व बिसकुट खाते॥
हाय कुछ न छोड़ा जी, जालिम लेगये सब लूट के॥ अब०—

१६—जालिम तेरी तलवार

ज़ालिम तेरी तलवार के डर से न डरेंगे।
हँस खेल हेल मेल से कुल जेल भरेंगे॥
चक्की चलायें शौक से मानीन्द रेल के।

छाती पै दुश्मनों के खूब दाल दलेंगे ॥ जालिम०
लुटेंगे पेश जेल में बट बट के रस्सियां।
ऊसर उजाड़ भूमि को आबाद करेंगे ॥ जालिम०
बांधेंगे ठाट टाट का बिस्तर लगा लगा।
फाके कशी करेंगे डरेंगे न मरेंगे ॥ जालिम०
परवाह जान की नहीं हरगिज़ बसन्त को।
झेल हज़ार सख्तियां तिल भर न टरेंगे ॥ जालिम०

१७–मरें भी अगर तो स्वदेशी कफ़न हो

जियें तो बदन पर स्वदेशी वसन हो।
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो ॥
पराया सहारा है अपमान होना।
जरूरी है निज शान का ध्यान होना ॥
है वाजिब स्वदेशी पै कुरबान होना।
इसी से है सम्भव समुत्थान होना ॥
लगन में स्वदेशी के हर मर्दोजन हो ॥ मरें०—
निछावर स्वदेशी पै कर माल जर दो।
स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो ॥
रहे चित्र से वह चकाचौंध कर दो।
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो ॥
स्वदेशीही सज धज स्वदेशी चलन हो ॥ मरें०—

चलो इस तरह अपना चर्खा चला दो।
मनों सूत की ढेरियां तुम लगा दो॥
बुनो इतने कपड़े मिलों को छुका दो।
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो॥
स्वदेशी ही गुल औ स्वदेशी चमन हो॥ मरैं०—
करो प्रण कि अजाद होकर रहैंगे।
जहां में कि बरबाद होकर रहैंगे॥
सितमगर ही या शाद होकर रहैंगे।
की हम शाहो आबाद होकर रहैंगे॥
स्वदेश ही अखतर स्वदेशी कथन हो॥ मरैं०—

आवश्यकता।

देश हितैषी भाइयों माताओं और बहिनों को उचित है कि देश कि स्थिति देख क्रम से अपने अपने महल्लों मिटीङ्ग कर चरखा चलाने और चलवाने का प्रयत्नकर देशके कार्य में सहायता पहुचाये।

नोट—हम एक महीने सूत कि आमदनी देखकर थोक रुई मंगाने धुनवाने तथा घर में बिनाई के काम का भी प्रबन्ध करेंगे।

निवेदक—

श्यामलाल अरोड़ा,

महल्ला सिद्धेश्वरी बनारस।

शुभ सन्देश।

इस समय देश में शुद्ध देशी खद्दर कि बहुत अवश्यकता है। जिसके न होने के कारण बहुत से विश्वास घातकी लोग विदेशी मोटे कपड़े को देशी खद्दर कहकर देश के भाइयों को धोखा दे अपना दोनों लोक बिगाड़ रहे है। किन्तु असल बात तो यह है कि बगैर चरखा चलाये न तो शुद्ध सूत मील सकता है और न बगैर शुद्ध सूत खद्दरही बन सकताहै। ऐसी स्थिति को देख मैंने अपनी माताओं और बहिनों के लिये कुछ चरखे बनवाये है और यह नियम रक्खा है किः—

(१) मेरे यहा २) दो रुपया नगद जमा कर अपना नाम और पता लिखाकर जो मातायें व बहिने इच्छा करें अपने घर चरखा ले जासकती हैं। किन्तु याद रहे कि यह चरखा उनके हाथ में वेचा नहीं गया है।

(२) चरखे से जो सूत निकले उसका मूल्य (सूत के अनुसार १) १।) १॥) १।॥) २) फी सेर के हिसाब से) मुझसे लेकर दे दिया करें। यदी वे अपने व्यवहार के लिये सूत का कपड़ा बिनवाना चाहे तो उसका भी प्रबन्ध कर दिया जायगा।

(३) जो स्त्रिया निस प्रयोजन चरखा घर अपने में ले जाकर पटक रक्खेगी उन्हें ।) चार आना मासीक भाड़ा देना होगा।

(४) जब इच्छा हो चरखा वपस देकर नाम लिखाई ।) काट बाकि १।॥) वपस ले सकती है।

निवेदक—

श्यामलाल अरोड़ा ठी० बाबू ठाकुर प्रसादजी अरोड़ा,

मोहल्ला सिद्धेश्वरी, बनारस।

गोकुल प्रेस बुलानाला बनारस सिटी।